International Journal of Sanskrit Research 2016; 2(5): 89-91

International Journal of Sanskrit Research

अनन्ता

ISSN: 2394-7519
IJSR 2016; 2(5):89-91
© 2016 IJSR
www.anantaajournal.com
Received:21-07-2016
Accepted: 22-08-2016

डॉ. संजू गर्ग
व्याख्याता – संस्कृत
राजकीय महाविद्यालय बहरोड़
जिला– अलवर, राजस्थान

Correspondence
डॉ. संजू गर्ग
व्याख्याता – संस्कृत
राजकीय महाविद्यालय बहरोड़
जिला– अलवर, राजस्थान

संस्कृत साहित्य में अध्यात्म चिन्तन

डॉ. संजू गर्ग

संस्कृत साहित्य भारतीय संस्कृति का मूलाधार है। संस्कृत साहित्य में धर्म,नीति,ज्ञानदर्शन एवं आचार व्यवहार का उपदेश मुख्य रूप से प्रदान किया गया है। इस वाड्.मय में नीति एवं नैतिक विचारों के चिन्तन की समृद्ध परम्परा रही है। वैदिक साहित्य से लेकर आधुनिक साहित्य तक नीति परक विचारों का प्रवाह समाज को नैतिक सम्बल प्रदान करता हुआ दृष्टिगोचर होता है। संस्कृत साहित्य धर्मनीति,राजनीति, लोकनीति, कूटनीति इत्यादि व्यवाहारिक नीतियों के उपदेश के साथ–साथ मानव को अध्यात्म ज्ञान का उपदेश भी प्रदान करता है। आत्मा एवं परमात्मा से संबन्धित ज्ञान को अध्यात्म ज्ञान कहा जा सकता है। अध्यात्मज्ञान या ब्रह्मज्ञान जीव को जगत के कष्टों से दूर अनन्त आनन्द की ओर, अल्प सत्ता से अनन्त सत्ता की ओर असत्य से सत्य की ओर, भ्रम से यथार्थ की ओर, जन्म मृत्यु के कर्मबन्धन से शाश्वत सुख और शान्ति की ओर प्रवृत्त करता है। अतः प्रत्येक मानव का कर्तव्य है कि वह आत्मा की अजरता और अमरता का ज्ञान प्राप्त कर सांसारिक विषय – वासना, माया–मोह इत्यादि में आबद्ध न होकर आध्यात्मिक ज्ञानार्जन में प्रवृत्त हो एवं आत्मा के यथार्थ स्वरूप को जानने का प्रयास करें ।

वैदिक साहित्य अध्यात्म ज्ञान का मूल है। वेद, ब्राह्मण ग्रंथ, आरण्यक एवं उपनिषदों में अध्यात्म ज्ञान का विशद् विवेचन किया गया है। उपनिषदों में वर्णित जीव ब्रह्मैक्य बोध निःसंदेह मानव के लिए परम कल्याणकारी है। ईशावास्योपनिषद् के प्रथम मंत्र में जीवन के यथार्थ रूप का प्रतिपादन करते हुए कहा गया है कि –

ईशावास्यमिदं सर्वं यत्किञ्च जगत्यां जगत्।
तेन त्यक्तेन भुञ्जीथा मा गृधः कस्यस्विद् धनम् ।। [1]

संपूर्ण चराचर जगत् परब्रह्म परमेश्वर से व्याप्त है। जगत् भ्रमरूपहै, ब्रह्म ही सत्य एवं यथार्थ है। अतः माया– मोह, विषय –वासना, काम क्रोधादि विकारों से आवृत्त मनुष्य को अज्ञानान्धकार को विनष्ट कर सत्य को समझकर मोक्ष प्रदायक परमात्मा के ध्यान में रत रहना चाहिए क्योंकि यही सर्वोपार है।

इन्द्रियेभ्यः परं मनो मनसः सत्वमुत्तमम् ।
सत्वादधि महानात्मा महतोऽव्यक्तमुत्तमम्।।
अव्यक्तात्तु परः पुरूषो व्यापकोऽलिङ्ग एव च।
यं ज्ञात्वा मुच्यते जन्तुरमृतत्वं च गच्छति ।। [2]

धर्मशास्त्रीय ग्रंथ पुराण एवं स्मृति साहित्य के अन्तर्गत भी अध्यात्म ज्ञान का बृहद् वर्णन उपलब्ध होता है। इन ग्रंथों में मानव को धर्म,कर्म एवं आचार व्यवहार कीशिक्षा के साथ–साथ अध्यात्म ज्ञान हेतु भी प्रेरित किया गया है। भागवत पुराण में आत्मा की अजरताएवं अमरता का प्रतिपादन करते हुए गया है–

नात्मा जजान न मरिष्यति नैधतेऽसौ
न क्षीयते सवनविद् व्यभिचारिणां हि ।
सर्वत्र शश्वदनपाय्युपलब्धिमात्रं
प्राणो यथेन्द्रियबलेन विकल्पितं सत्।। [3]

परिवर्तन नश्वर देह में ही संभव है, आत्मा तो अपरिवर्तनशील शुद्ध स्वरूप है। अतः जीवन का परमसत्य परब्रह्म परमेश्वर ही है और आत्मा उसी परमात्मा का अंश है।

स्मृति साहित्य में पुरूषार्थ चतुष्टय का उल्लेख मिलता है। धर्म, अर्थ,काम और मोक्ष जीवन के आधार है। स्मृति ग्रंथों में वर्णित धर्म,अर्थ और काम के साथ मोक्ष रूपअंतिम लक्ष्य की प्राप्ति के संदर्भ में किया गया अध्यात्म ज्ञान का वर्णन सर्वथा ग्राह्य हैयथा–

यदा भावेन भवति सर्वभावेषु निःस्पृहः।
तदा सुखमवाप्नोति प्रेत्य चेह च शाश्वतम् ।।
अनेन विधिना सर्वास्त्यक्त्वा सङ्गाच्छनैः शनैः।
सर्वद्वन्द्व विनिर्मुक्तो ब्रह्मण्येवावतिष्ठते।।
ध्यानिकं सर्वमेवैतद्यदेतदभिशब्दितम्
न ह्यनध्यात्मावित्कश्चित्क्रिया फलमुपाश्नुते।।[4]

अर्थात समस्त सांसारिक विषय वासनाओं से विमुक्त, कामनाओं से रहित निरासक्त एवं समशीतोष्ण प्रकृति वाला व्यक्ति अध्यात्म ज्ञान से युक्त होकर ब्रह्मतत्व में लीन हो जाता है। अध्यात्म ज्ञान से व्यक्ति सांसारिक बंधनों से मुक्त होकर परमात्मा में एकीभूत हो जाता है।

लौकिक साहित्य के अन्तर्गत मुख्यरूप से मानव को लोकव्यवहार का ज्ञान प्रदान किया गया है। सामाजिक प्राणी के रूप में उसके कर्तव्यों का प्रतिपादन इन ग्रन्थों में मिलता है। तथापि जीवन के अंतिम एवं यथार्थ सत्य के रूप में अध्यात्म ज्ञान का वर्णन भी उपलब्ध होता है। रामायण एवं महाभारत दोनों ही ग्रंथ ऐसे हैं जिनमें कि मानव जीवन के प्रत्येक पक्ष को प्रतिबिम्बित किया गया है। देह कि नश्वरता और मत्यु की अनिवार्यता के संदर्भ में कहा गया है कि –

सर्वे क्षयन्ता निचयाः पतनान्ताः समुच्छ्रयाः।
संयोगा विप्रयोगान्ता मरणान्तं च जीवितम् ।। [5]

अर्थात मृत्यु अवश्यम्भावी है। जो जन्म लेता है उसकी मृत्यु निश्चित है। अतः देह नश्वर होने के कारण शोक का विषय नहीं है। परमात्मा की प्राप्ति का मार्ग बतलाते हुए कहा गया है –

सत्यवादी हि लोकेऽस्मिन् परमं गच्छति क्षयम्। [6]

महाभारत के भीष्म पर्व में कृष्ण द्वारा अर्जुन को दिया गया गीता का उपदेश अध्यात्म ज्ञान का आगार कहा जाए तो कोई अतिशयोक्ति नहीं होगी । शांति पर्व, अनुशासन पर्व, आश्रमवासिक पर्व एवं स्त्री पर्व इत्यादि में अध्यात्म ज्ञान का बृहद् वर्णन उपलब्ध होता है। देह की नश्वरता आत्मा के नित्य अविनाशी, अजर एवं अमर रूप का प्रतिपदान निष्काम कर्म की व्याख्या इत्यादि के माध्यम से परमतत्व को प्राप्त योगी की स्थिति का उल्लेख अध्यात्म ज्ञान का उत्तम दृष्टांत है यथा –

एषा ब्राह्मी स्थिति पार्थ नैनां प्राप्य विमुह्यति ।
स्थित्वास्यामन्तकालेऽपि ब्रह्मनिर्वाणमृच्छति ।। [7]

जगत् की उत्पत्ति परमात्मा से हुई है पुनः प्राणी उसी परमात्मा में लीन हो जाता है। संपूर्ण चराचर जगत् का सार परमात्मा ही है और जो इस सत्य को जान लेता है वह सांसारिक बंधनों से विमुक्त होकर परमात्मा में एकीभूत हो जाता है। यथा–

यतः सृष्टानि तत्रैव तानि यान्ति पुनः पुनः ।
महाभूतानि भूतेभ्यः सागरस्योर्मयों यथा ।।
प्रसार्य च यथाङ्गानि कूर्म संहरते पुनः ।
तद्वद् भूतानि भूतात्मा सृष्टानि हरते पुन : ।। [8]

परमात्मा की प्राप्ति ज्ञान संयम तप, योग, स्वाध्याय, प्राणायाम और निरासक्त भाव से कर्म करने से ही संभव है। अध्यात्म ज्ञान से ही व्यक्ति का अन्तःकरण विशुद्ध होता है जो कि परमात्मा की प्राप्ति का प्रमुख हेतु है। जिस प्रकार जल मे बर्फ, सवर्ण में आभूषण, मिट्टी में घटादि पदार्थ व्याप्त रहते हैं यदपि से सब दृष्टिगोचर नहीं होते हैं उसी प्रकार संपूर्ण चराचर जगत परमात्मा से व्याप्त है। व्यक्ति अपने समस्त कर्मों का निरासक्त भाव से पूर्ण कर यदि परमात्माको अर्पित कर देता है, तो वह कर्मफल बन्धन से विमुक्त होकर परमात्मा को प्राप्त हो जाता है। यथा –

शुभाशुभफलैरेवं मोक्ष्यसे कर्मबन्धनैः।
संन्यासयोगयुक्तात्मा विमुक्तो मामुपैष्यसि ।। [9]

परमात्मा की सत्ता सभी में निहित है वह निराकार विशुद्ध अन्तःकरण वाला है। कामना,माया –मोह एवं सांसारिक विषय वासनाओं में आबद्ध कामी मनुष्य अज्ञान के कारण परमात्मा के यथार्थ रूप को न जानकर उसे मंदिर, मस्जिद, गिरजाघर और गुरूद्वारे में ढूँढता फिरता है,जबकि कस्तूरी मृग की गंध की भाँति परमात्मा तो सभी प्राणियों के हृदय में उपस्थित है। अध्यात्म ज्ञान से ही व्यक्ति मोक्ष को प्राप्त कर सकता है और कामनाओं से पूर्णतः निवृत्त होने पर ही अध्यात्मज्ञान संभव है यथा –

यदा निवृत्तः सर्वस्मात् कामो योऽस्य हृदि स्थितः ।
तदा भवति सत्वस्थस्ततो ब्रह्म समश्नुते ।। [10]

समस्त बंधनों का मूल आसक्ति, काम वासना और अज्ञान ही तो है। सांसारिक गहन वन के दृष्टांत के माध्यम से स्त्रीपर्व में विदुर ने अध्यात्म का सूक्ष्म प्रतिपादन किया है। ''संसार रूपी दुर्गम वन में नाना प्रकार की व्याधि रूपी सर्प से आक्रान्त, सौन्दर्य को विनष्ट कर देने वाली वृद्धावस्था रूपी स्त्री से भयभीत, शरीर रूपी कुएँ में जीवन की आशा रूपी लता का आश्रय ग्रहण किए हुए स्थित, काल रूपी नाग द्वारा भयाक्रांत किया जाता हुआ, संवत्सर रूपी हाथी और दिन – रात रूपी चूहों द्वारा आक्रान्त देहधारी, कामना रूपी मधु की लिप्सा में जीवन के मोह का परित्याग नहीं करता है, किंतु विद्वान पुरूष संसार चक्र की इस यथार्थता को जानते हैं। अतः वे वैराग्य रूपी शस्त्र से इसके सारे बंधनों को काट डालते हैं।''[11]

यह अध्यात्म ज्ञान ही मनुष्य के बंधनों को विछिन्न कर परमतत्व से एकाकार में सहायक होता है। पुरूषार्थ चतुष्टय के समुचित क्रियान्वयन से व्यक्ति संसारचक्र से विमुक्त होकर परमतत्व में लीन हो जाता है। प्रत्येक मनुष्य को संसार के यथार्थ स्वरूप को जानकर, ब्रह्म के सत्यरूप को स्वीकार कर मायामोह के भ्रमजाल से मुक्त होकर अपने कर्तव्य का यथोचित रूप से निर्वहन करना चाहिए ।

श्री कृष्ण के द्वारा अर्जुन के कर्तव्यपथ से विचलित होने पर दिया गया अध्यात्म का उपदेश संपूर्ण मानव जाति के कल्याण में सहायक है। गीता में वर्णित अध्यात्म का सूक्ष्म विवेचन दिग्भ्रमित समाज को सही दिशा प्रदान करने वाला है। यह अध्यात्म ज्ञान शुद्ध, सूक्ष्म बुद्धि तथा अन्तकरण की निर्मलता से ही संभव है। परमात्मा के अंश रूप में विद्यमान आत्मा सब शरीर में विद्यमान रहते हुए भी शरीर के दोषों से संलिप्त नहीं होता है, क्योंकि आत्मा अनादि एवं निर्गुण है। अतः आत्मा जन्म, मृत्यु इत्यादि विकारों से परे है। यथा –

यथा सर्वगतं सौक्ष्म्यादाकाशं नोपलिप्यते ।
सर्वत्रावस्थितो देहे तथाऽऽत्मा नोपलिप्यते ।। [12]

अर्थात् जिस प्रकार सर्वत्र व्याप्त आकाश सूक्ष्म होने के कारण सम्बन्ध युक्त नहीं होता है वैसे ही आत्मा शरीर में सर्वत्र स्थित रहते हुए भी शरीर कृत गुण दोषों में लिप्त नहीं होता है।

लौकिक साहित्य के अन्तर्गत रामायण एवं महाभारत के अतिरिक्त अन्य काव्यों में भी अध्यात्म का वर्णन उपलब्ध होता है। भर्तृहरि का वैराग्य शतक भी अध्यात्म ज्ञान का अनुपम उदाहरण है। भर्तृहरि सांसारिक भोगों को क्षणभंगुर बतलाते हुए उनके परित्याज्य का तथा परमात्मा में रत रहने का ज्ञान प्रदान करते हुए कहते हैं–

भोगा भङ्गुर वृत्तयों बहुविधास्तैरेव चायं भव ।
स्तत्कस्येह कृते परिभ्रमत रे लोकाः कृतं चेष्टतैः ।
आशापाशशतापशान्तिविशदं चेतस्समाधीयतां
कामोत्पत्ति वशात् स्वधामनि यदि श्रद्धेयमस्मद्वचः ।। [13]

अर्थात् समस्त भोग सांसारिक बंधन के कारण हैं। अतः भोग माया मोह और आशाओं को त्यागकर निर्मल चित्त एवं विशुद्ध अतंकरण से परमात्मा के ध्यान में लीन हो जाना चाहिए ।

संस्कृत साहित्य का अनुशीलन करने पर यह स्पष्टतः कहा जा सकता है कि जीवन का परम लक्ष्य परमात्मा ही है। यह जगत् मिथ्या है। भौतिकता की चकाचौंध से अभिभूत होकर मनुष्य सत्य को भूल जाता है और माया–मोह, विषय–वासना, आदि में ही संलिप्त रहता है। अध्यात्म ज्ञान ही एक मात्र ऐसा साधन है जो मनुष्य को कर्म बन्धन से विमुक्त कर परमात्मा से एकाकार में सहायक सिद्ध होता है।

संदर्भ सूची

1. ईशावास्योपनिषद्, 01
2. कठोपनिषद्, 02/03/07–08
3. श्रीमद्भागवत महापुराण, 11/03/38
4. मनुस्मृति, 06/80–82
5. श्रीमद्वाल्मीकीयं रामायणम्, अयोध्याकाण्ड, 105/16
6. श्रीमद्वाल्मीकीयं रामायणम, अयोध्याकाण्ड, 109/11
7. महाभारत, भीष्म पर्व, 26/72
8. महाभारत, शांति पर्व, 194/6–7
9. महाभारत, भीष्म पर्व, 33/28
10. महाभारत, शांति पर्व, 66/38
11. महाभारत, स्त्री पर्व, 6/7–14
12. महाभारत, भीष्म पर्व, 37/32
13. भर्तृहरि शतक़त्रयम्, वैराग्य शतक, 39